बहुसांस्कृतिक शिक्षाः उभरते वैश्विक परिदृश्य की आवश्यकता

नीरज कुमार चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर
प्रो. एच. एन. मिश्रा कॉलेज ऑफ एजूकेशन, कानपुर

सारांश

दूरसंचार एवं इंटरनेट ने विश्व को एक वैश्विक गांव में बदल दिया है, लोगों के विश्व के विभिन्न देशों और देश के विभिन्न भागों में आव्रजन एवं प्रवचन ने संभावनाएं तथा चुनौतियां दोनों ही बढ़ा दी हैं । विभिन्न संस्कृतियों का मिलन संघर्ष तथा तनाव भी पैदा करता है। वैश्विक स्तर पर हमने अमेरिका में श्वेत एवं अस्पताल के बीच भेदभाव तथा संघर्ष एवं उससे जनित "Black Lives Matter" आन्दोलन का साक्षात्कार किया साथ ही हिंदू एवं सिख समूह एवं उनके धर्म स्थलों पर हमले भी खबरों में छाए रहे (Black lives Matter, 2013)। फ्रांस में विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक समूहों के संघर्ष भी समाचारों में रहे (Mei & Hawas, 2009)। भारत के विभिन्न क्षेत्रों एवं प्रांतों में भी निकट भूत तथा वर्तमान में विभिन्न नृजातीय समूह के मध्य संघर्ष सांस्कृतिक समूहों के बीच विवाद एवं अस्मिता के लिए संघर्ष देखने को मिले हैं । उदाहरणार्थ , विभिन्न सांस्कृतिक / धार्मिक उत्सव एवं शोभा यात्राओं के दौरान झगड़े एवं संघर्ष (भगवान परशुराम की....24 मई 2023: रामनवमी. ...30 मार्च 2023), जातिगत संघर्ष एवं तनाव (मथुरा मे.....पथराव, 14 अप्रैल 2023), वर्तमान में मणिपुर राज्य (मणिपुर में....2023) में भड़की सामूहिक हिंसा जैसी घटनाएं यह चिंतन करने पर विवश करती हैं कि आखिर समाज में बंधुत्व , सहिष्णुता, समता और समायोजन का ऐसा अभाव क्यों है और इसका समाधान क्या है ?

बहुसंस्कृतिवाद का विकास एवं बहु सांस्कृतिक शिक्षा इन समस्याओं का एक प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है। इसके कई लाभों में से मुख्य लाभ यह है कि यह लोगों के विभिन्न समूहों के बीच व्यापक दृष्टिकोण या खुले दिमाग की सोच को प्रोत्साहित करता है तथा नकारात्मक रूढ़िवादिता को दूर करता है यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र ने बताया है दुनिया के एक तिहाई प्रमुख संघर्षों का एक सांस्कृतिक आयाम अवश्य है (Twose , 2021)। मानव समाज को विकासआपसी अन्योन्याश्रयता एवं अंतर्राष्ट्रीय समझ तथा सौहार्द्र की आवश्यकता समझने तथा विकसित करने के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा (Multicultural Education) की महती भूमिका है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं पहलुओं को उजागर करने तथा संभावित समाधान की रूपरेखा प्रस्तुत करने का एक प्रयास है।

संकेत शब्दः- *सांस्कृतिक, बहुसांस्कृतिवाद, बहुसांस्कृतिक शिक्षा।*

प्रस्तावना :–

"Divide we fall, United we stand, Diversified we grow."

- Cultural Infusion Foundation (www.culturalinfusion.org.au)

उत्तरोत्तर विकास की आकांक्षा, तीव्रतर यातायात साधन, व्यापक दूरसंचार, एवं इंटरनेट ने भौगोलिक दूरियों के सिमटाव, संवाद एवं संपर्क को इतना आसान कर दिया है कि हमारा विश्व एक वैश्विक गाँव में बदल गया है। भारत सहित किसी अन्य राष्ट्र के लिए भी यह बात उतनी ही सत्य है। विभिन्न संस्कृतियों एवं पृष्ठभूमि के व्यक्तियों या परिवार का मिलन जहाँ मानव संसाधन का सर्वोत्तम दोहन कर तथा क्षमताओं के परस्पर पूरक होने के अवसर का लाभ प्रदान कर मानव तथा मानव समाज के सर्वांगीण विकास हेतु अपार संभावनाएँ पैदा करता है वहीं शांति, सद्भाव, सहिष्णुता, एवं समावेशी विकास, राष्ट्रीय एकीकरण, तथा विश्व–बन्धुत्व की स्थापना में चुनौतियाँ भी बढ़ा रहा है।

विश्व के विभिन्न भागों में तथा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भी स्थानीय या पूर्व स्थापित मानव समाज या समूहों तदन्तर में आए मानव समूहों के मध्य संघर्ष विभिन्न अन्तराल में देखने को मिलता रहा है। इन संघर्षों के कई आयाम हैं दृ गरीबी, बेरोजगारी, प्राकृतिक संसाधनों की कमी, अशिक्षा, रूढ़िवादिता, सांस्कृतिक मताग्रह एवं पूर्वाग्रह आदि। हालाँकि, संयुक्त राष्ट्र ने बताया है कि दुनिया के एक तिहाई प्रमुख संघर्षों का सांस्कृतिक आयाम है (Twose,2021)। इन तरह के संघर्षों से न केवल मानव समाज के विकास की गति में बाधा आई है बल्कि यह कई पायदान नीचे भी खिसक गई है। इतिहास गवाह है जर्मन शासक हिटलर की "आर्य श्रेष्ठता" की रूढ़िवादी सोच ने द्वितीय विश्वयुद्ध की कैसे विभीषिका पैदा की । विगत वर्षों में अमेरिका में हुए भेदभाव और संघर्ष से जनित "Black Live Matters" आंदोलन भी इसी ओर इंगित करता है। फ्रांस, चीन के शिनजियांग प्रांत बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, श्रीलंका तथा नेपाल आदि देशों में अल्पसंख्यक संस्कृति के लोगों के प्रति हिंसात्मक व्यवहार समाचारों की सुर्खियां रहे हैं। भारत में भी विदेशी छात्रों के प्रति नस्लवादी भेदभाव एवं हिंसा की घटनाएं निकट भूत में होती रही हैं (Ethnic relation…-- India, 2023)। ये घटनाएँ इस बात की तरफ संकेत करती हैं कि समावेशी विकास के क्रम में विश्व भर में शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के लिए मानव समाज को बहुसंस्कृतिवाद को खुले मन से अपनाना होगा ।

बहुसंस्कृतिवाद :–

बहुसंस्कृतिवाद यह दृष्टिकोण है कि एक प्रमुख राजनीतिक संस्कृति के भीतर विभिन्न संस्कृतियों नस्लें और जातीयता हैं विशेषकर अल्पसंख्यक समूहों की अपनी भी नेताओं या विशिष्ट अदाओं की विशेष स्वीकृति के पात्र हैं (Encyclopedia Britannic, 2023)। बहुसंस्कृतिवाद किसी विशिष्ट मानव या मानव समूह के सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करते हुए तथा उसके प्रति किसी भी भेदभाव का निषेध करता है। यह विभिन्न मानव समूहों की सांस्कृतिक विविधता को खुले मन से अंगीकार एवं प्रोत्साहित करता है तथा नकारात्मक रूढ़िवादिता को दूर करता है (Twose,2021)।

सांस्कृतिक विविधता को अंगीकार करना न केवल शांति को बढ़ावा देती है बल्कि समाज को, समाज में रहने के लिए और अधिक दिलचस्प जगह बनाती है। विभिन्न संस्कृतियों के लोग हमें भोजन, भाषा, संगीत, कला और साहित्य, इतिहास, धर्म आदि के बारे में अलग–अलग अंतर्दृष्टि देने के साथ ही काम करने के वैकल्पिक तरीके भी प्रस्तुत कर सकते हैं(Twose,2021)।

विश्व के प्रायः सभी देशों तथा भारत में भी मानव एवं मानव समूहों के बीच किसी भी प्रकार के भेदभाव यह हिंसा के निषेध हेतु कानून हैं या निर्मित किए जा रहे हैं, परंतु इस मुद्दे के प्रति मानव मस्तिष्क एवं संवेदनाओं को संवेदनशील बनाना अनिवार्य है(Hazarika,2017)। यह व्यापक कार्य केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा :–

सन 1960 के दशक में अपने संप्रत्यात्मक उद्भव से आज तक बहुसांस्कृतिक शिक्षा अपने सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक स्वरूप में लगातार विकसित होती रही है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा को स्पष्ट करते हुए बैंक्स एवं बैंक्स ने कहा है, "बहुसांस्कृतिक शिक्षा विविध प्रजाति, नृजाति, धर्म, सामाजिक वर्ग, एवं सांस्कृतिक समूहों से आने वाले छात्रों के लिए समान शैक्षिक अवसरों का निर्माण करने के मुख्य उद्देश्य वाला उदीयमान विषय एवं अध्ययन का क्षेत्र है (Banks & Banks, 1989)। यह सामाजिक न्याय शैक्षिक समिति एवं सभी विचारधाराओं के प्रति सम्मान की भावना पर आधारित है (Shanker, 2021)। बहुलतावादी प्रजातांत्रिक समाज में प्रभावी

तरीके से कार्य करने के लिए तथा जनहित के निमित्त एक सभ्य तथा नैतिक समाज के निर्माण के क्रम में विभिन्न वर्गों से आने वाले लोगों के साथ अंतर्क्रिया करने, तालमेल बिठाने एवं संवाद स्थापित करने के लिए आवश्यक ज्ञान अभिव्यक्ति एवं कौशल अर्जन में सभी छात्रों की मदद करना इसके प्रमुख उद्देश्य में से एक है (Banks & Banks, 1989)।

विषय की प्रासंगिकता :–

किसी भी भौगोलिक क्षेत्र अथवा मानवीय समाज में नई सांस्कृतिक समूहों का प्रवेश शिक्षा के क्षेत्र में भी कई मुद्दे पैदा करता है। सांस्कृतिक समूह से तात्पर्य केवल संस्कृति या नृजातीयता से ना होकर लिंग, आयु, भाषा, यौन अभिविन्यास और अन्य ऐसे ही विशेष व्यक्तियों के समूह से लगाया जाने लगा है (Cultural Infusion, 2023)। अतः बहुसांस्कृतिक शिक्षा का स्वरूप भी मात्र भाषा या प्रजाति विभेद को सुलझाने के अतिरिक्त उभरते सांस्कृतिक विविधताओं के बीच सौहार्द्र, आपसी सम्मान एवं सामंजस्य से जीने की कला सिखाना और विकास तथा शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व को बढ़ावा देना है।

विश्व के विभिन्न महाद्वीपों के देशों जैसे अमेरिका, फ्रांस, चीन, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल आदि में अल्पसंख्यक संस्कृति के लोगों प्रति एवं उनके सांस्कृतिक पहचानों के प्रति हिंसात्मक, रूढ़िवादी एवं दुर्भावना पूर्ण व्यवहार, तथा भारत में भी विभिन्न क्षेत्रों में बसे अल्पसंख्यक संस्कृति के मानव समूहों के प्रति हिंसात्मक, रुढ़िवादी व्यवहार व संघर्ष (Hazarika, 2017 ; Niumai, 2023) एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना, राष्ट्रीय एकीकरण तथा विश्व बंधुत्व के सपनों को साकार करने में बाधा पैदा करता है। जबकि विभिन्न राष्ट्रीय संस्थाओं एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर समावेशी विकास और शांतिपूर्ण सह अस्तित्व को हासिल करने का लक्ष्य तय किया जा रहा है (National Education Policy, 2020 ; UNDP, 2023)। ऐसे में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के बारे में गहनता से विचार करना समीचीन होगा।

बहु सांस्कृतिक शिक्षा किसी शैक्षिक व्यवस्था में व्यापक तौर पर विविध सामुदायिक संस्कृति के लिए निर्मित अनुदेशन एवं शिक्षा व्यवस्था से संबंध रखती है। अध्ययन – अध्यापन का यह उपागम विभिन्न नृजातीय समाज के मध्य आम सहमति बनाने, आदर भाव जगाने एवं सांस्कृतिक वैविध्य को पोषित करने पर आधारित है। सांस्कृतिक शिक्षा विद्यालय एवं कक्षा वातावरण में सकारात्मक नृजातीय वैशिष्ट्य को स्वीकार एवं शामिल करती है। बहुसांस्कृतिक शिक्षा, शिक्षा में विभेदकारी नीतियों एवं क्रियाकलापों की आलोचना करने एवं सम्यक समाधान सुझाने वाली एक प्रगतिशील प्रणाली है। यह सामाजिक न्याय, शैक्षिक समता, आलोचनात्मक शिक्षण, एवं शैक्षिक अनुभवों की उपलब्धता के आदर्शों पर आधारित है जो हर छात्र को स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक अध्येता के रूप में, एक जागरूक एवं सक्रिय नागरिक के रूप में, अपनी पूर्ण क्षमता प्रदर्शन का अवसर प्रदान करती है। सामाजिक अन्याय के उन्मूलन एवं वैश्विक समाज के समावेशी विकास में विद्यालय की आवश्यकता को बहु सांस्कृतिक शिक्षा रेखांकित करती है (Six reasons why……, 2023 ; Mockrish, 2022)।

प्रस्तावित समाधान :–

बहुसांस्कृतिक शिक्षा हेतु विद्यालयों में निम्नलिखित विशेषताएँ हो सकती हैं , या विकसित की जा सकती हैं (Adams, Niss & Suarez ,1991 ; Banks, 2008 ; Campbell, 2010 ; Mockrish, 2022) –

❖ शिक्षा के उद्देश्य–

- शैक्षिक समता की उपलब्धता
- छात्र एवं अभिभावक सशक्तिकरण

- कक्षा विद्यालय एवं समुदाय में अंतर– वर्गीय, अंतर–सांप्रदायिक एवं अंतर–सांस्कृतिक समझ तथा सांस्कृतिक बहुलतावाद को महत्व देने वाले समाज का विकास
- वैयक्तिक एवं सामूहिक स्वतंत्रता
- विविध सांस्कृतिक जनजातीय एवं नृजातीय समूहों का सम्यक ज्ञान

बहु सांस्कृतिक संदर्भों के प्रति जिज्ञासु एवं भिज्ञ छात्र, अभिभावक, शिक्षक एवं अन्य सेवा प्रदाताओं जैसे पत्रकार, परामर्शदाता, डॉक्टर, फिल्म या लघुफिल्म निर्माता, वाहन चालक, पाठ्यक्रम निर्माता आदि का विकास।

❖ शिक्षण विधि –

- कक्षाओं में छात्रों के अनुभवों को प्रधानता देना जिससे अधिगम को सक्रिय, अंतर्क्रियात्मक, प्रासंगिक एवं सहभागिता पूर्ण बनाया जा सके
- पारंपरिक शिक्षण उपागम एवं शिक्षण–ढाँचों की संस्थागत–शोषण तंत्र के दुखद विकास में भूमिका का विश्लेषण करना तथा उसकी पुनर्रचना करना
- रैगिंग जैसे दमनात्मक, शोषक एवं विभेदकारी कृत्य को हतोत्साहित एवं दंडित करना
- शिक्षण एवं अधिगम के सभी पहलुओं को परीक्षा प्राप्तांकों एवं कक्षा में स्थान के बदले स्वयं छात्रों की विशिष्टता पर पुनर्केंद्रित करना
- तथ्यों एवं आंकड़ों के साथ–साथ आलोचनात्मक चिंतन, अधिगम– कौशल तथा गहरी सामाजिक समझ के विकास को महत्व देना
- सभी विद्यार्थियों को उसकी क्षमता का बोध एवं संप्राप्ति कराने में हर संभव सहायता करने की विधि अपनाना

❖ पाठ्यक्रम –

- पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं, विशेषकर सामाजिक सांस्कृतिक पहलुओं का, सत्यता, सटीकता एवं समग्रता के लिए विश्लेषण कर समावेशी बनाना
- विद्यार्थियों के विचारों अनुभव एवं दृष्टिकोण को पाठ्यक्रम में शामिल करना
- उन शैक्षिक सामग्रियों एवं माध्यमों को पाठ्यक्रम में शामिल करना जिससे वैविध्य एवं वैशिष्ट्य को एक दूसरे के पूरक एवं समृद्धि कारक के रूप में प्रतिष्ठा मिलती हो

❖ कक्षा वातावरण –

- शिक्षक पाठ्यक्रम की मंशा अनुसार सभी छात्रों के लिए सकारात्मक माहौल निर्माण करने के लिए तैयार हो
- व्यापक रूप से संपूर्ण विद्यालय संस्कृति का इस निमित्त गहन निरीक्षण हो कि दमनकारी या शोषणकारी सामाजिक मान्यताओं या क्रियाकलापों का समर्थन या प्रकटन ना हो
- विद्यालय प्रशासन सभी शिक्षकों के लिए सकारात्मक शैक्षिक वातावरण प्रदान करने में मदद करने हेतु तथा सांस्कृतिक विविधता को अंगीकार करने वाले विधियों को प्रोत्साहित करने हेतु सदा तत्पर रहें। समय–समय पर इनका मूल्यांकन भी किया जाए

❖ परीक्षा एवं मूल्यांकन –

- शिक्षक एवं शोधकर्ताओं को प्रचलित मानकीकृत परीक्षणों के प्राप्तांको की वैधता को बार–बार जांचने तथा छात्रों की उपलब्धि अभिक्षमता एवं योग्यताओं को जांचने के लिए अन्य सटीक विकल्प तलाशने चाहिए।
- विद्यार्थियों के मूल्यांकन के उपकरण एवं प्रणाली में संस्कृति के पड़ने वाले प्रभावों को यथासंभव न्यून या नगण्य रखने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- प्रचलित एवं नए शैक्षिक कार्यक्रम अथवा योजनाओं के विद्यालयों में अल्प अथवा न्यून प्रतिनिधित्व वाले मानव समूह या समुदायों पर पड़ने वाले तात्कालिक एवं दूरगामी प्रभावों का सतत मूल्यांकन का तंत्र विकसित होना चाहिए।

बहुसांस्कृतिक शिक्षा की निम्नलिखित आधारभूत विशेषताएँ इसे अधिक प्रासंगिक बना देती हैं –

1. बहुसांस्कृतिक शिक्षा की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह समूह के मध्य समझ एवं सहनशीलता बढ़ाती है। लोग एक दूसरे से ज्यादा बेहतर हिल मिल पाते हैं जब उन्हें दूसरों की सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं वैशिष्ट्य या साम्य का ज्ञान हो। शिक्षकों के लिए क्या ज्यादा लाभप्रद है क्योंकि छात्रों की पृष्ठभूमि की समझ उन्हें तादात्म्य स्थापित करने में तथा मार्गदर्शन प्रदान करने में सहायता पहुंचाती है।(Six reasons why…-2023)।
2. बहुसांस्कृतिक पाठ्यक्रम छात्रों को स्वयं का बेहतर बोध कराती है , उन्हें अपने वैशिष्ट्य के बेहतर आत्मसातीकरण एवं प्रकटीकरण का सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है। दैनिक जीवन में यह उनके आत्मबोध एवं आत्मविश्वास पूर्ण व्यवहार को बढ़ाती है तथा उन परिस्थितियों में ज्यादा बेहतर समायोजन के लायक बनाती है जहां प्रजाति, नृजाति, धर्म, संस्कृति या सामुदायिक पहचान की बड़ी भूमिका होती है (Campbell, 2010 ; Mockrish, 2022)।
3. सांस्कृतिक शिक्षा उत्पादकता बढ़ाती है क्योंकि सामान कार्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के मानसिक संसाधन उपलब्ध होते हैं और यह सभी लोगों के बीच संज्ञानात्मक और नैतिक विकास को बढ़ावा देता है। समान प्रकृति के समस्याओं के समाधान के लिए प्रयोज्य विभिन्न दृष्टिकोणों के उपयोग के द्वारा यह शिक्षा सृजनात्मक समस्या समाधान कौशल की क्षमता को बढ़ावा देती है।
4. यह शिक्षा विद्यार्थियों में उनके तथा अन्य के सामुदायिक सदस्यता, सहभागिता, संस्कृति व संस्कार के प्रामाणिक एवं तथ्यपरक ज्ञान एवं उनके महत्व की समझ में सहायक है। यह ज्ञान एवं समझ सामान्य रूप से उसके समूह एवं अन्य समूहों के बीच तथा विशेष रूप से उसके व अपने समूह के बीच संबंधों के निर्माण की आधारशिला है।(Banks, 2008 ; Bennett,1990 ; Mockrish,2022)
5. ये पाठ्यक्रम विभिन्न समुदाय के परिवारों एवं व्यक्तियों में आत्मसम्मान को बढ़ावा देने वाले हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उनकी विशिष्टता के प्रति अन्य लोग भी जिज्ञासा तथा आदर भाव रखते हैं। इस तरह सभी सांस्कृतिक या धार्मिक समुदाय, एक दूसरे की ज्यादातर तथ्यपरक एवं प्रामाणिक समझ के आधार पर, पारस्परिक सम्मान की भावना पैदा करते हैं। (Davidman & Davidman, 1997 ; Bennett, 1990)
6. बहु सांस्कृतिक शिक्षा विशेषकर भारत जैसी विविधता एवं सांस्कृतिक बहुलता वाले देश के लिए अपनी विरासत पर गर्व करना सिखाने वाली और आपसी समझ पैदा कर पारस्परिक सम्मान करना सिखाने वाली शिक्षा होगी। (Mockrish, 2022 ; Shanker, 2021)

भारतीय वांग्मय में 'अयं निजरू परोवेत्ति गणना लघु चेतसाम् उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुंबकम की शिक्षा अति प्राचीन है। परन्तु, राष्ट्रीय स्तर पर या वैश्विक स्तर पर 'कुटुम्ब' की सही मायनों में स्थापना अभी शेष है। हम एक समावेशी समाज के रूप में अभी विकसित होना है ताकि संपूर्ण मानव संसाधन का सर्वोत्तम एवं सर्वांगीण दोहन, जिसे 'Demographic Dividend' की संज्ञा दी जाती है, हो सके। और, अंततः, समृद्ध तथा शांतिपूर्ण विश्व की स्थापना हो सके। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की इसी दिशा में शिक्षकों बढ़ावा देने का आकांक्षी है।

संदर्भ सूची :–

भगवान परशुराम की शोभायात्रा पर पथराव (2023, 24 मई). अमर उजाला, google.com/amp/s/www.amarujala.com/amp/rajasthan/stone-pelting-on-lord-parshuram-procession.in

मथुरा में भरतिया में आंबेडकर शोभायात्रा में पथराव (2.37pm, अप्रैल 14,2023). दैनिक जागरण. google.com/amp/s/www.jagran.com/lite/uttarpradesh/mathura-stone-pelted-at-ambedkar-procession

रामनवमी शोभा यात्रा के दौरान हिंसा, हावड़ा में फूंके गए वाहन, वडोदरा में दो बार पथराव, संभाजी नगर में भी हिंसा(10.21pm, मार्च 30,2023). आज तक. from google.com/amp/s/www.aajtak.in/amp/India/gujrat/story/stone-pelting-in-vadodara-on-shobha-yatra..

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* https://education.gov.in/sites/upload_files/MHRD/NEP_final_Hindi_0.pdf

मणिपुर हिंसा 2023 (2023, मई). In Wikipedia . Retrieved May 12,2023 from https://hi.m.wikipedia.org>wiki

Adams, J.Q., Niss, J. F. & Suarez, C. (Ed.). (1991). *Multicultural education: Strategies for implementation in colleges and universities*. Vol. 1. Western Illinois University.

Banks, C. ,& Banks, J. ,(1989). *Multicultural education: Issues and perspectives*. Allyn and Bacon Inc.

Banks, J. (2008). *An introduction to multicultural education. (4th ed.).* Pearson.

Bennett, C. (1990). *Comprehensive multicultural education : Theory and practice (2nd ed.).* Allyn and Bacon.

Black Lives Matter (2013). In Wikipedia. Retrieved May03,2023 from https://en.wikipedia.org/wiki/Black_Lives_Matter

Campbell, D. (2010). *Choosing democracy: A practical guide to multicultural education (4th ed.).* Pearson

Cultural Infusion (2023). *Six reasons reasons why multi cultural education is essential in our diverse world.* www.culturalinfusion.org.au/6-reasons-why-multicultural-education-is-essential-in-our-diverse-world/

Davidman, L. & Davidman, P. (Ed.). (1997). *Teaching with a multicultural perspective (2nd ed.).* Longman.

Encyclopedia Britannica (2023, May), *Multiculturalism ldefinition, Impact, Challenges, & Facts*. https://www.britannica.com/topic/multiculturalism

Ethnic Relation in India (2023, May). In Wikipedia. Retrieved May14,2023 from https://en.wikipedia.org/wiki/Ethnic_Relations_in_India

Hazarika, S. (2017). Discrimination, being North eastern and Indian-ness. Hindustan Times (August 11, 2017). www.hindustantimes.com/analysis/discrimination-being-north-eastern-and-indianness/story

Meier, J. & Hawes, D. (2009). Ethnic conflict in France. *The American review of public administration, 39*(3), 269-285. https://researchgate.net/publication/261644001_Ethnic_Conflict_in_France

Mockrish, T. (2022, Oct 13). Why multicultural education is crucial in our diverse world. opinion, times of India . https://www.google.com/amp/s/timesofindia.indiatimes.com/blogs/voices/why-multicultural-education-is-crucial-in-our-diverse-

Niumai, A. (2023). Racism Against North East Indian Women. *Economic & Political Weekly. 58(*23), 2023. www.epw.in/journal/2023/23/letters/racism-against-north-east-indian-women.html

Shanker, M. (2021). Multicultural approach in Indian higher education. www.Linkedin.com/pulse/multicultural-education-approach-indian-higher-shanker

Twose, R. (2021). The importance of cultural diversity. www.languageinsight.com/blog/2021/importance-of-cultural-diversity

UNDP(2023). Sustainable and Inclusive Growth. https://www.undp.org/India/sustainable-and-inclusive-growth

How to cite reference of this paper-

चौधरी. एन. के. (2023). बहुसांस्कृतिक शिक्षाः उभरते वैश्विक परिदृश्य की आवश्यकता**.** *Educational Metamorphosis, 2*(1), 7-11.